

२३ नमः ॐ गोविन्दसिन्हायः ॥ ॐ नमो ब्रह्माय ॥ गुणवन् नमो धर्माय
मान (लनमः ॐ द्याय मरु फ म ४ यद वा म कि म ना व न के न कम थ म
ति त य व य का या ना न अरु के गा मरु लि म नि कि न र हो ध्व म सर्वा व का इ
ना ४ के ला म श्री वि वा ले य मु दि न द्वा द या ४ य व वि शा ध न ला सु मा न
द्या न रु न म नि व न व व न र श्म उ मा र्था नि स व आ या ना र्था उ का मा इ

158 -
Namasani
giti.

374 I

असुत्रसुत्रगता सिद्धिगवर्चनागा ४ कृष्णलुकिनत्रया गवतुद्वि
रुजा गकवक्तादिदवा ४ यज्ञायत्रायत्रात्रे विरुवन्नु नमिगं मदनीरुत
रायं रुक्का रुं वा वयामि पुस्तमिगिलसांगं मरुतनसंगं ॥ ॐ नमो व
द्वाय ४ नधर्माय नमः ४ संद्याय नमो नमः ॥ ॥ ॐ नमो मरुतमंश
नाथाय ॥ अथ वज्रध्वज ४ श्रीमान् इन्द्रा नृदमकयत्र ॥ रुना कवि

कथिवीना गुरुनाकै लिगस्तत्र ॥ ॥ विवृद्धयलुलीकाक आसुत्रक
मत्रानन यालानयवज्रवलं स्वकस्तममृदुमृदु ॥ २ ॥ रुक्मिणीतंग
पुमूखेत्रद्वं वज्रयातिरि ॥ इन्द्रा नृदके वीने वीलरुस्वययिरि ॥ ३ ॥
उल्लालयति स्वकत्रे पुमूत्रा वज्रकाटिहि ४ पुष्पायाय मरुतमरुतफल ॥ ४ ॥
गदर्थकत्रे ॥ ४ ॥ रुद्ररुद्रगयिमृदिने काधविगुरुयिरि वृद्धपुत्र
यत्र

कथेनारथे साद्य यत्नविग्रहे ॥ ५ ॥ पुनर्म्यनाथसंवद्धं रुगवन्मथा
 गनं कृतांजलियुगलत्वा ॥ ६ ॥ मादृष्टिनागुग ॥ ७ ॥ मच्चिनायममा
 धीयः अनुकंयायमेविहा मायाजातारिसंवाधि यथात्राहिरुवाच्यरुं ॥ ८ ॥
 अस्तनयंकनसनां अगव्याकृतवगसा ॥ ९ ॥ हिताय सर्वसत्त्वानामनुरुनरु
 लाफय ॥ १० ॥ उकाशयिउसंवद्धां रुगवांसास्तान्गुगकुपू ॥ मयासमय

गतुरुन्दिष्यासयवित्यन ॥ ११ ॥ रुगवांस्तानकाय मलाष्टीषगीषु
 नमैरुगीस्तनसत्वस्य स्तानमूर्तिस्वयंरुव ॥ १२ ॥ गरीयाथामृदानाथ
 मलाथासमासिवात ॥ १३ ॥ आदिमध्यान्ककल्यानिनामसंगीतिमूलमो ॥ १४ ॥
 यामिनेस्यितांवद्धां लयिष्यन्कृतागुग ॥ १५ ॥ यत्नंनावसंवद्धां यालयिर्नपुन
 षुनः ॥ १६ ॥ मलाज्ञासमहागुग आवास्मिर्नपगीयकः मलावजधनदृष्टे

नृपमयेमंगलप्रतिहिति ॥ ११ ॥ अहंवेनाप्रययिष्यामि तिर्य्यो नंवधुध
 गय। यथाहगवान्म्यहं नाथ सम्यक् संवृद्ध उरुधृक् ॥ १२ ॥ अहं गयी
 यस्तत्त्वानां यथास्य विगमन ॥ अहं गय कृगनासाय अहं गय हानन
 य ॥ १३ ॥ अहं मय उरुधं वज्रयासि नथ गमगने। कृनां कलियुटीह
 लाय कृकायस्ति वायुनः अहं वज्रयासि नथ गमगने ॥ १४ ॥

अथ सायमनिहगवान् संवृद्धादिपक्षलम ४ निर्नमर्यायतासीता स्वदि
 क्तास्वमृत्वाहं ॥ १ ॥ स्मिन्मंगलस्य लोका नामयायुगुजस्वधनः मेता
 कलासकसल वज्रमानानि सासनं ॥ २ ॥ श्रीशक्रमायुलयता वज्रा
 मधुनयोगिजा। एतत्त्वयायुगुहं वज्रयासि नथ गमगने ॥ ३ ॥ साधु
 वज्रधनः श्रीमानसाधुन वज्रयासि य ४ कृत्स्नं जगदिनाथ मलो कनमया

चिन्तं ॥ ८ ॥ महात्मा नाम संगीति यविना मद्यना गनि मशुशीहानका
 यम्य संकु (म) उं समुद्यन ॥ १ ॥ महात्मा धृदगया (ग) म ४ अरुं क गु चकाधि
 कः शृंगत्व मकागमना महात्मा धृदगवांतिनि ॥ २ ॥ यतिवचनमाथाय
 ॥ ॥ अथ महात्मा धृदगवान सकलमंगकल मरु ॥ ३ ॥ मंगुविधा
 धलंकल ववलाककलंय ॥ ४ ॥ लोका लोका लोका लोका लोका लोका

कलं मरुटा महात्मा धृदगवान सकलमंगकल मरु ॥ २ ॥ यतिवचनमाथाय
 ववनेमाथाय ॥ ३ ॥ ॐ मां यत्न नो जान संशक मद्यया हय अन
 त्यादधर्ममाथाय वंगमगिजायन ॥ ४ ॥ अजा ॐ ॐ उडु उडु उडु उडु
 ॥ ५ ॥ ॥ लिगाददिहानमूर्तिन संवृद्धा वृद्धो नापु ध्ववर्तिनां ॥ ६ ॥
 ॥ उं वजगी पुड ४ व धृद ४ पुहाहानमूर्तिन हानकायवागी ध्वन रं

अथ यत्र नायक नमः ॥ ३ ॥ गद्यार्थरुगवां वृद्धा संवृद्धा कालसंलव अका
न सर्ववर्त्तु रग्य मस्तार्थयत्र मा नून ॥ १ ॥ मस्तार्था दहन न्या दा वा उ दा
स्तान वरिणि ॥ सर्वाणि लाप रुता रग्य सर्ववाग्म यरा स्वन ॥ २ ॥ मस्ताम
ह मस्तानाग सर्व सत्त्व नितिकन ॥ मस्तामह मस्तारुष सर्वकुग मस्तानिय ॥
३ ॥ मस्तामह मस्तामाह मूढा दिवह संदन ॥ ४ ॥ मस्तामाह मस्तार्था

मस्तार्था धनिय मदन ॥ ५ ॥ मस्तामह मस्तानाह सर्व सात निमन्दन
मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तामाह मस्तानि ॥ ६ ॥ मस्तानुया मस्तार्था म
स्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्ताना मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था
मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था
॥ ७ ॥ मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था मस्तार्था

महामार्यदुर्जालिक ४॥ ८ ॥ महादानपरीशुद्धमहागीलधवाशुनी
महाकांतिधवाधीना महावीर्यमनाक्रम ॥ १० ॥ महाध्यानसमाधि
महायुद्धगलीनधुक् ॥ महावनामहापायवृक्षीधितानसागलः ॥
११ ॥ महामेरीमयोमयामहाकनूलीकाशुली ॥ महाप्राज्ञमहाधी
मान् महापाया महाक्षणि ॥ १२ ॥ महाप्राद्विवना यक्षमहावरगम

राजवामहाद्विकामहगाव्या महावनयनाक्रम ॥ १३ ॥ महारुवादिमं
हर्तुमहावजधवाद्यन महाकुनामहाजोडा महारुयंरुयंकन ॥ १४ ॥
महाविद्यागमानाथा महामल्लोत्तमागुत्र ॥ महायाननयातुदा महायानन
यालुम ॥ १५ ॥ वज्रभारुमहामयुतगाथावतुर्दम ॥ १६ ॥ महावे
जावतावृक्षा महाभोनिमहामूनि ॥ महामंगुनयालुका महामंगुनयाम

क॥ १ ॥ दग्गयानमितायाका दग्गयानमिताशुयः दग्गयानमिताशुद्वि
दग्गयानमिता नय ॥ २ ॥ दग्गहूमिधनाना (था) दग्गहूमिधुगिष्ठिना
दग्गहूनविशुद्धात्मा दग्गहूनविशुद्धवृक ॥ ३ ॥ दग्गं काला दग्ग
था (थी) मृतिं दादग्गवना विरु ॥ अग्गयविश्वार्थकना दग्गकाथावगी
महान ॥ ४ ॥ अनादिनीयपंचात्मा शुद्धात्मा कथतात्मक रूपावादिद्य

थावादीनथाकाली अनंत्यक ॥ ५ ॥ अद्ययाद्यवादीव रूपाकादि
व्यवस्थित निनात्मासिंद निनाद कृतीर्थमृगहिकन ॥ ६ ॥ सर्वगणः
माघगणि सुथागतमना कव जिनाजिना नवीकयी वकुवली महावन
॥ ७ ॥ गलमूखा गलवाद्य गल्यवनगलयनीवगी महागवा (अ) प्रया
अन्यनया महानय ॥ ८ ॥ वागीशवाग्मी वाग्म वावस्थितिनंरुगीः

सत्यवासत्यवादीचक्षुःसत्यायदगक ॥ ९ ॥ अथेवलिङ्गादनागम
मिस्वमेपुत्यंकनायकः नानानिर्यानेनिर्याना सहाहोकेकावन
॥ १० ॥ अहंश्रीः अथवाहिकुवेननागमिर्निर्यादियाः ४ कमयाकाह्यं
प्रापः भीनिरुताकनाविन ॥ ११ ॥ विशावनेऽसंयन्तः सगताकवि
त्यनः निन्मभानिनरुंकावः सत्यद्वयनयस्तिग ॥ १२ ॥ संमानयान

कानिष्ठः कनकस्थसुतस्तिग ॥ केवल्यहानविस्मृतः यहासत्वाविदा
नय ॥ १३ ॥ सधर्मधर्मनाटः राखा लाकासाकननः यन ॥ धर्मधर्मा
धर्मनागाः यथामार्गयदगक ॥ १४ ॥ सिद्धार्थसिद्धसंकल्पः सर्वसं
कल्पवर्जितः निर्विकल्पाकृपाध्वः धर्मधर्माकृपाव्यय ॥ १५ ॥ यस्मि
वायुसंराजः हानहानाकनमरुतः हानवासदगहानी संराभाद्यय

संलग्न ॥ १७ ॥ सास्वभाविस्वभ्राष्ट्राणि ध्याना ध्यायिष्यायनि पत्न्यान्
 मध्याह्नवन् यन्मायसीकाय धृक् ॥ १८ ॥ यंचकायात्मका विरु। यंचव
 छात्म मपूटयंचवश्नसंग धृक् ॥ १९ ॥ जनकं सर्ववृक्षानां वृक्षपूजाय
 नावने पुहारुवरुवयानि धर्मयानिरुवांग धृक् ॥ २० ॥ द्यनेकसात्रा
 वजात्मा मयजाका जगत्यनि। गगरक्षा हवस्वयंरु। पुहाराहाना नयाम

स्तान् ॥ २० ॥ वेनाचनमदादिपि हानकागि विवाचन। जगत्यलिप
 हान्यत्मा मरुतकायरास्वन ॥ २१ ॥ विद्यावाका गीतस्व मंजुवाका
 मदाथरुक् ॥ मदापूया रुणापूया विदगि वियत्यरि ॥ २२ ॥ सर्व
 वृक्षा मरा वाग्ग्या जगदानंद सावन। विस्नूयी विधागाव यजमाना
 मदाअधि ॥ २३ ॥ कूलंजय धना मंजी मदास्मय मंजु धृक् ॥ नतंज

यधनः ४ (गुह्य) जीयानां रुमदभाक ॥ २४ ॥ अमायया मावीर्ययी वरुदा
 (मा मला गुह्य) चक्रां कुं मलाया (मा वरुदे नवहिरुन ॥ २५ ॥ युधि
 गुह्य धर्म धा उल्लान गभा यं च विंशति ॥ ॥ काधवा यन्मयी हीम
 त्वत्तु गुह्य रुजा वलि ॥ ५ द्वाक सात कं कात रुता रुतु ग नानेन ॥ ॥
 ऊर्णा नका विष्टुना वरुव (मा हं कल ४ विशुष्ट वरु वजा माया वजा

प्रसादय ॥ २ ॥ फलिसंश्रव रुयानि वरुमं (पुन कायम ॥ अत्रैक रु
 नाटाया गजवर्मा यदक धृक् ॥ ३ ॥ सादा कात्रा मला धाया सीही कात्रा
 रुयानक ॥ अल्ला स्वमला दो स्व वरु सा स्व मला वरु ॥ ४ ॥ वरु सत्व म
 ला मत्व वरु नाका मला मत्व ॥ वरु वडा मा ला मा दा वरु रुं का न रुं द्वा नि
 ॥ रु ॥ वरु वा रायू धधया वरु ख (मा नि हं गन विश्व वरु धना वजि व

गता

कवशीयंजह ॥ ११ ॥ वज्रहालाकरी वज्रहालागिनाचूह वज्रावग म
हावगगताकावजनाचन ॥ १२ ॥ वज्रनामाकृतं वनू वज्रनामेकवि
गुह वज्रकाटिनखातं सौ वज्रसानचनचुवी ॥ १३ ॥ वज्रमाताधन
शीमानवज्राकृतं सखियेता ॥ हाहाउहा ॥ अनिद्याया वज्रधाव खउ
कन ॥ १४ ॥ मंशयायामहानादउत्राक कृतमाहानु जाकागधाउ
ह

यय्यनायायायदवतां वन ॥ १० ॥ आदगहनमाथायादानसाध
दग ॥ ॥ सथगारुगनेवात्मा रूगकाटिननंजह अन्यतावादिवृ
यहा गंरिनादानगर्जह ॥ ११ ॥ धर्मसंयामहागष्टा धर्मगंदिमहान १२
त अपुनिष्ठिगानिदी ॥ १२ ॥ दमदिधर्मइंइरिः ॥ १३ ॥ अतयापुयवा
नायु नानापुयामनामयह सर्वपुयारुवा संगीन ॥ १४ ॥ पुनिविंवधुह

॥ ३ ॥ अथ (ध्यानामहमस्तु) ध्यातुकमहध्वन। समुत्तिगार्यमार्ग
 स्था धर्मकउमदादय ॥ ४ ॥ लोकिककुमात्रांग स्तुवीत्रावृद्धपु
 जायति छात्रिं गतकलध्वन। आंगुलिकसंदन ॥ ५ ॥ लोकहानउत्साः
 वार्ध साकाचार्यविग। धने साधुना साकाय गतसगायीनूहन ॥
 ६ ॥ गगतात्मगसंराज सर्वरूपा सागत ४ अविद्यादकागं ह ना रवयं ज त

दानत ॥ ७ ॥ समिगा (गय संक्रम संसात्रा लुषयानग ४। हानाति
 धकमकटा सम्यसंवृद्धयन ॥ ८ ॥ रिड इत्ये इत्यसंमत ४ स्तुंता न
 गतिमूर्फिग। सर्वावनन विनिनूक आकाग सममांगत ॥ ९ ॥ सर्वक्रम
 मस्तानीग स्तुध्वनद्वभाकिंगग सर्वसत्वमस्ताना (ग। गुलाग। यनरायन
 ॥ १० ॥ सद्योयधिविनिभूक आसवंमनिस्तुल्लिग मस्तविंतामनिधना

१२

बुद्धनिदानमाफवान। मुक्तिमाकविमाकांश। विमुक्तिमाकवासिन॥
१२ ॥ निर्वातनिवृत्तिगोपि॥ १३ ॥ यामिध्मनमरुफः सखइवइवोंगः
पुनिष्टावेनायमप्येवोक्त॥ २० ॥ अरुयानूयमायका। नीरासामाः
निचंडहन॥ निस्त्रयां सर्व। मयापि सुश्रुवीरुमनायव॥ २१ ॥ अत्रज
विप्रहाविमलावागदावानियांमह सपवृद्धविबुद्धामा सर्वरुहानमात्रेगे

॥ २२ ॥ विहानंधर्मगांभीर्थरुहानमंधानूयाधिक॥ ॥ निर्विकृत्यानि
नाहागल्यर्थसंवृद्धकायधिक॥ २३ ॥ अनादिनीधनावृद्धा आदिवृद्ध
निचंधय हानेककृतंमूलहानमृत्तिगधमगन॥ २४ ॥ वागीधनामहा १५
वादिवादिनागदिद्वंजन वसामां वजिस्त ववादिमिंदयनाजिन॥ २५ ॥
समगांदगीपामाय नगास्त ससुदगोन जीमत्स संयुहादिपि सावास्त

कनशनि ॥ २७ ॥ महासीयवनापुष्टु गन्धर्वानिपूरुष अगवर्षयः
 ननु कुगव्याधिमहाविष्टु ॥ २८ ॥ जेलाकनिलकंकांता श्रीमानकृष्ण
 उल्ल दगदिग्यामयर्थे जा धर्मधर्ममहाशुभा ॥ २९ ॥ जगच्चक्रीकवीर्य
 सा मेरीकनूनमभुस यधनृत्यधनगीमानवत्तच्छामहाविरह ॥ ३० ॥
 सर्ववृद्धमहानामा सर्ववृद्धामहावधूक् ॥ सर्ववृद्धमहायाग सर्ववृद्ध

कस्तमन ॥ ३० ॥ वज्रवत्ताहियकशी सर्ववत्ताधियधन । सर्वसांक्य
 जयति सर्ववज्रधनाधिप ॥ ३१ ॥ सर्ववृद्धमहाविरह सर्ववृद्धमना
 गति । सर्ववृद्धमहाकाय सर्ववृद्धमनश्चति ॥ ३२ ॥ वज्रसूर्यमहाला
 का वज्रन्ध्रविमनापुष्टु दिवातादिमहानागा विस्ववर्षाकृतपुरु ॥ ३३ ॥
 संवृद्धावजयय्यका वृद्धसंजीवेधर्मधृक् ॥ वृद्धयधार्हवगीमान् सर्व

रुद्रनकागधृक् ॥ ३४ ॥ विश्वमायाधनानाशबुधविद्याधनामरुद्र
वक्रणीशुभसहाय ॥ विश्वधृष्टयजमाकृत ॥ ३५ ॥ ३४ त्वष्टमसाया
नवक्रधर्ममसायुध ॥ शक्तिनशीधवक्ररिण्यावक्रवृद्धियथार्थवीज ॥
३५ ॥ सर्वयानमितापुत्री सर्वरुमिविरुपनविशुद्धधर्मनेनात्मास
म्यग्लानादृष्टयन ॥ ३६ ॥ मायाज्ञानामसायाग सर्वमंगुधियधन ४

अगवक्रयय्यता निगमज्ञानकायधृक् ॥ ३७ ॥ समंततदसमितिः
क्षितिगर्हाकयधृक् ॥ सर्ववृद्धमसागर्हा विश्वनिर्मानवधृक् ॥ ३८ ॥
सर्वरावस्वरावा ॥ सर्वरावस्वरावधृक् ॥ अनृत्यादधर्मनीस्वार्थ सर्व ११
धर्मस्वरावधृक् ॥ ३९ ॥ ३९ कश्चमसासाहा सर्वधर्माविदाधृक् ॥
सर्वधर्मासिममयाहनामनियुधि ॥ ४० ॥ क्षितिमिससुपसनात्मा

सम्यक् वृद्धवाचि धृक् ॥ पुन्यकसर्ववृद्धानां ह्यानविगुणुलस्वन ॥ ५२ ॥
 पुन्यकह्यानगाद्यावत्तुल्य ॥ ५३ ॥ ॥ न्यार्थसाधकपत्र ४ ॥ सर्वा
 पायविस्वधृक् । सर्वसत्त्वात्मनाथ सर्वसत्त्वायमावक ॥ ५४ ॥ ॥
 गसमसमूत्रेक अज्ञानदीपुदयस्त । धीः शृंगानधनगीमान्त्वीनवी
 रत्सन्नुपधृक् ॥ ५५ ॥ ॥ वास्तुदन्तगताकय दनीकयनकूल गीमच्चु

ललाकार्यु गगनगगनरुम ॥ ५६ ॥ ॥ उकार्थद्वयधर्मार्थ यनमार्थ
 विनयन नानानिहानिद्रयार्थ शिरुविहानसमगी ॥ ५७ ॥ ॥ अगमयरावा
 धननि उन्यतातमितयध । रवनागमयनिकय रवंतयमसावनि ॥ ५८ ॥ ॥ १८
 उद्धुललादवन सन ॥ ५९ ॥ ॥ वातार्कमला मच्छाया मसाना
 गनं पुरु ॥ ६० ॥ ॥ ॥ उनीतामसंवीता मसनीलकवाग धृक् ॥ मसाम

375 I

यज्ञानुदगादिस्तक धर्मदानयनिमस्तान् ॥ १ ॥ मेरीन्तादुसंनद्ध फ
वृक्षावत्सवसीन ४ पुस्तुखे मेधनूवान् जेगस्तानवर्तुदु ४ ॥ ८ ॥ माता
तिमात्रदिदीन चतुमानरुयांन दृष्ट ॥ सर्वमालवमरुता संवृक्षासा
कतायक ॥ ९ ॥ वंदयस्व विवाद्यय माननीचनिर्यस ४ अचनीया
नमामान्या नमस्तुयनमस्तु ॥ १० ॥ उत्तरेककगमनि वामययंन

विक्रम ४ उ विद्य अगियपुग पठरिहायठनस्तुनि ॥ ११ ॥ वाधि
सत्त्वामनासत्त्वा काटिका मरुद्विक ॥ पुस्तुयावमिगानिष्ट ५ पुस्तुगत्त
समागन ॥ १२ ॥ आत्मवियनवीत्सर्व सर्वविद्या दृगपंगल ॥ सर्व
पमासगिका नो ह्युत्तानाधिय ४ यन ४ ॥ १३ ॥ धर्मदानयनिमस्तान्
वदुमूडार्धदगक ॥ पुस्तुयावमिगानिष्ट ५ पुस्तुगत्त

आर्यमाया जालया उगसा सुमिकायां मलाया गतुं न यागि सा मा धिजा न
 पटला इगवन न थागन ४ उगि मा द्य मूनि ता विनं रगवन्का मं ह गि हान
 सत्तस्य येन मा र्थे ना म संजा नि य नि स मा य ४ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 यत्र मी रु उ पु हा द्य रु उ न यो न था ग न द्य व र्द रु न यो न था नि ना न उ र्व वा
 दी म हा गु म र्वा ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

१ उं न मा वृ द्वा य ॥ ॥ न मा र्ग व न अ य नि मि ना ये ॥ ॥ न र्त्वं म था गु न म क सि
 स म य र ग वा न गु व र्त्वा दि क न मि स्य ४ ॥ रु न व न अ ना थ यि पु द स्या ना म
 म रु ना रि रु ४ र्त्वं य न सा द्य न द्य उ या द ग रि रि रु ग न ४ सं व रु ने य वा धि स त्वे
 म हा स त्वे ४ रु न व न र ग वा न म रु उ गी यं कृ मा न रु न मा म रु य न स ॥ अ मि
 र्त्वं गी नू य नि स्या या म य नि मि द रु स सं व या ना म ला क षा उ रु ना य नि मि ना नू

5

एषा यन्त्रिः यावत्सकफगता मयि दृष्ट्वा गृह्णन् नयिष्यन्ति वा नयिष्यः
 निः पश्यन् वा पश्यन्ति पलस्य दृष्टिस्तत्र तसं प्रकाशयिष्यन्ति ॥ यद्यप्यथ दीप
 गंधमासविप्रयनवर्तुषो वनवृक्षवृक्षघञ्जयनाकारिश्च समन्ता दीपमा
 नातिश्च यज्ञातिश्च पृष्ठश्च ॥ इत्यनिक्रिदाद्यद्य ४ यूनजवर्षगतायुषा एविष्य
 निः ॥ ॐ ॥ यावत्सकफगता मयि दृष्ट्वा गृह्णन् नयिष्यन्ति वा नयिष्यः

[illegible][illegible]

यत्रिवात्रस्वाहा ॥

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

9

[illegible]

निमिताय ४ सुकुंलित्विष्यंनिलित्वाययिष्यंति ॥ सकदाचिन्ननकषयय
 श्रुत ॥ नगीर्य १५५ नो नयमसाक नचक्रनायय नो नकदाचिदयिषुनि
 लक्ष्यन् ४ यगुयगु नमनिजनायययन् ॥ नगुनगु नगीनागीनागिन् ११
 मसारविष्यन्ति ॥ १२ ॥ **उं नमो गवगु अयनिमिताय हानस ५ ॥**
 ॥ य ०० दमयनिमिताय ४ सुकुंलित्विष्यंनिलित्वाययिष्यंति ४ नच

नागीनिधर्मस्वध सरुसातिलित्वायिकातिरुवन्ति ॥ १३ ॥ य ०० द
 मयनिमितायः सुकुंलित्विष्यंनिलित्वाययिष्यंनचक्रनागीनिधर्मनामि
 का सरुसातिकायायिगानियमिष्टायिगानिरुवन्ति ॥ १४ ॥ **उं नमो**
गवगु अयनिमिताय हानस ५ ॥ ॥ य ०० दमयनिमिताय ४ सुकुंलि
 ष्यंनिलित्वाययिष्यंति ॥ तस्ययं चानं रर्यालिक म्मावननानियनिकुर्य

गच्छन्ति ॥ १५ ॥ ॐ नमो भगवते अथ विमिताय ह्यन ॥ ॥ अथ
 ॐ नमो भगवते अथ विमिताय ४ सुगन्ति विष्यन्ति लिखाय विष्यन्तिः तस्य नमो
 नूनमानकायिकान् नयका ननानाका नमयूत नवगात्रं नलस्येति ॥ १६ ॥ ॐ नमो भगवते अथ विमिताय ह्यन ॥ ॥ अथ ॐ नमो भगवते
 यः सुगन्ति विष्यन्ति लिखाय विष्यन्तिः तस्य नमो भगवते नमयूत नवगात्रं नलस्येति

१२

यः संमुखदर्शनदास्यन्ति । वृद्धं स सुसुखं सुखं नमो भगवते नमयूत नवगात्रं नलस्येति
 सुमुखं संक्रामन्ति ननु काका विमिति ॥ विविचिन्ता मृत्यादयि नमः ॥ १७ ॥
 ॐ नमो भगवते अथ विमिताय ह्यन ॥ ॥ अथ ॐ नमो भगवते अथ विमितायः सुगन्ति
 विष्यन्ति लिखाय विष्यन्तिः तस्य नमो भगवते नमयूत नवगात्रं नलस्येति ॥ १८ ॥ ॐ नमो भगवते अथ विमिताय

यज्ञानसविः॥ ॥ हृदमजयविमितायुःसुखंलियंनिलिखाय
यिष्यन्ति।ससुखावस्थांलाकधातोमिनारुनथागतस्यवृद्धकुरु
ययञ्क॥ १९ ॥ उंनमारुगावकजयविमितायुज्ञान॥ ॥ यस्मि
पृथिवीपदगहृदमयविमितायुःसुखंलियंनिलिखाययिष्यंति
सपृथिवीपदगहृदमयवन्दनीयश्चरविष्यन्ति।यिष्यंति।यिष्यंति।यिष्यंति।

मानांमृगयन्तिनांदुष्टिनांकलेपुटनियन्तिष्यन्ति४१सर्व१नूतवायांसम्य
वांवारधीनयिष्यन्ति।यिष्यंति॥ २० ॥ उंनमारुगावकजयविमितायुज्ञान॥
॥ ॥ यहृदमयविमितायुःसुखंलियंनिलिखाययिष्यंति
नस्यसीरावानंदविदयिष्यन्ति।यिष्यंति॥ २१ ॥ उंनमारुगावकजयवि
मितायुज्ञान॥ ॥ यहृदमयविमितायुःसुखंनतत्राकधर्मययी

यमदिग्धनुकमयिकार्यायनदानदास्यति ॥ नननितदनुमदासुसुला
 कधामुसफपत्तमयीपनिपूर्वकृत्वादानंदद्यात् ॥ नम्ययंयस्त्वंधस्यपुमा
 लगव्यंगलसिद्धं ॥ नत्वयनिमित्ताय ॥ २१ ॥ सपुस्ययस्त्वंधस्यपुमालगव्यं
 गलसिद्धं ॥ २२ ॥ ॐ नमोएगवकअयनिमित्ताय ॥ २३ ॥ ॥ यन्
 मयनिमित्ताय ॥ सपुस्ययस्त्वंधस्यपुमालगव्यं ॥ ननसकजसमायंसदम

१५

पूजिताहवंगि ॥ २३ ॥ ॐ नमोएगवकअयनिमित्ताय ॥ २४ ॥
 यस्त्वंधस्यपुमालगव्यं ॥ नत्वयनिमित्ताय ॥ २५ ॥ सपुस्ययस्त्वंधस्यपुमालगव्यं
 गलसिद्धं ॥ नत्वयनिमित्ताय ॥ २६ ॥ ॐ नमोएगवकअयनिमित्ताय ॥ २७ ॥
 यस्त्वंधस्यपुमालगव्यं ॥ नत्वयनिमित्ताय ॥ २८ ॥ ॐ नमोएगवकअयनिमित्ताय ॥ २९ ॥

॥ यथा समो यव्वन नाक स्य सम तत्र ता गिं कृत्वा दानं दशा रुस्य पु
 स्तक स्य पुमाल गवंगतयितुं न त्वय निमित्ताय ४ स एव स्य पुस्तकं
 धस्य पुमाल गवंगतयितुं ॥ २० ॥ उं नमो रुगवक अपनिमित्ताय हान
 ५ ॥ यथा वत्ता आमहा समुद्रा उदकपनिपूष्पैः रुवय ४ उरु क
 डल विंइ गतयितुं ॥ न त्वय निमित्ताय ४ स एव स्य पुस्तकं धस्य पुमाल गवंग

गतयितुं ॥ २० ॥ उं नमो रुगवक अपनिमित्ताय हान ५ ॥
 यदुदमपनिमित्ताय ४ स एव लिखिष्यंति लिखापयिष्यंति स एव यदु
 यिष्यंति ॥ रुनदगदि रुसर्ववृद्धक एव सर्वतथा गतावन्दितायूजिना
 श्रुविष्यंति ॥ २१ ॥ उं नमो रुगवक अपनिमित्ताय हान ५ विनिश्चिगः
 ५ ॥ यथा वत्ता आमहा दीयना नाविधनं कृषी कालयक्यव (मधुम

गाली मंगमाषनीलादिं कालयत्तु कालयित्वा नागनाशनावर्षधामा
 मनुष्यचुंगि नानि गस्यानिष्ठायेक नानिरुसा नि^मकेकं गलियितुं
 ॥ नत्वयनिमिताय ४ स तु स्य पूर्व स्कंधस्य पुमाद्यगसंगलियितुं ॥ २८
 ॥ उं नमो रुगवक अपनिमिताय हान सुविनिश्चिन्नकना नाशाय तथा ग
 नायारुक्क सम्य संव द्वाय ॥ नद्यथा ॥ उं पूर्व २ मस्य पूर्व अपनिमिता

१६

अपनिमिताय पूर्व हान सर्वरात्राय चिन् ४ उं सर्व संस्कारपनिगुद्धव
 र्मराक गल समंगक स्व ताव विगुद्धम हान ययत्रि वा न स्वाहा ॥ २९ ॥
 दानव तन स मंगत वद्धा दानव लाधिगता नय सिंहा ॥ दानव वयस्य
 यतिगष्ट कात्रो लकस्य पुत्रपुविगने ॥ ॥ गीतवतन स मंगत वद्धा
 गीतवलाधिगता नय सिंहा गीतव वयस्य च यतिगष्ट कात्रो लकस्य पुत्र

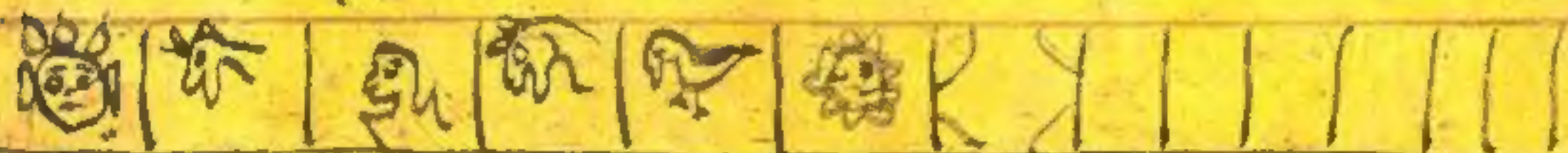
युविगानं ॥ ॥ कान्तिवलनसमंगनवृद्धा कान्तिवलाधिगगान
नसिंदः कान्तिवत्रस्यवशुयनिगद्य कान्तिदीकस्यपुत्रयुविगानं ॥
॥ वीर्यवलनसमंगनवृद्धा वीर्यवलाधिगगाननसिंदः वीर्यवत्र
स्यवशुयनिगद्य कान्तिदीकस्यपुत्रयुविगानं ॥ ॥ ध्यानवसनस
मंगनवृद्धा ध्यानवलाधिगगाननसिंदः ध्यानवलस्यवशुयनिगद्यः का

११

पलिकस्यपुत्रयुविगानं ॥ ॥ पहावलनसमंगनवृद्धापहावलाधिग
गाननसिंदः पहावत्रस्यवशुयनिगद्यः कान्तिदीकस्यपुत्रयुविगानं ॥
३० ॥ ॐ नमो भगवते कृष्णाय त्रिमिताय कृष्णानसू विनिश्चिनकडायायाय
नथागताया हृन्कसम्यक्प्रवृद्धाय ॥ तद्यथा ॥ ॐ पुण्य २ मसापुण्याय
त्रिमिताय पुण्यलिमिताय पुण्यहृन्कानसंरात्राय वि ॐ सर्वसंस्कारपत्रि

92

१ कलनामयनमरु १५५



दा ज्ञा द्विपि ना लुप्तमथा वा
 ७७ पा

हृत्मानममो गम २ ॥ किंतिं ~~क~~ ल्यथा ११ ॥ किंथा

पा ११ ॥ यतं ल्यपादं सूद ॥ ल्यपा

